वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित

गुरुवार, पौष कृष्ण पक्ष, दशमी, कलियुग वर्ष ५१२२ (८ जनवरी, २०२१)

वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु समर्पित ऑनलाईन दैनिक वृत्त पत्र

धर्माचरण हेतु कष्ट उठाना, राष्ट्र हेतु समय देना एवं साधना हेतु त्याग करना, यह सनातन उपासना है।

e-mail : upasanawsp@gmail.com, website : www.vedicupasanapeeth.org.

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं

९ जनवरी २०२१ का वैदिक पंचांग

कलियुग वर्ष – ५१२२ / विक्रम संवत – २०७७ / शकवर्ष - १९४२.....कलके पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपरजाएं.....https://vedicupasanapeeth.org/hn/kal-ka-panchang-08012021

देव स्तुति

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्॥

अर्थ : शरदकालमें उत्पन्न कमलके समान मुखवाली और सब मनोरथोंको देनेवाली शारदा सब सम्पत्तियोंके साथ मेरे मुखमें सदा निवास करें।

शास्त्रवचन

गीत्वा च मम नामानि रुदन्ति मम सन्निधौ।
तेषामहं परिक्रीतो नान्याक्रीतो जनार्दन॥

अर्थ : आदिपुराणमें वर्णित नाम महिमा : हे अर्जुन ! जो मेरे नामोंका गान करके मेरे समीप प्रेमसे रो उठते हैं, उनका मैं क्रय किया हुआ सेवक हूं; यह जनार्दन दूसरे किसीके हाथ नहीं बिका है।

****

न देशनियमस्तस्मिन् न काल नियमस्तथा।
नोच्छिष्टेऽपि निषेधोऽस्ति श्रीहरेर्नाम्नि लुब्धक॥

अर्थ : श्रीहरिके नाम-कीर्तनमें न तो किसी देश विशेषका नियम है और न काल विशेषका ही। जूठे अथवा अपवित्र होनेपर भी नामोच्चारणके लिए कोई निषेध नहीं है।

धर्मधारा

साधको ! आपातकालकी तीव्रता आरम्भ होनेसे पूर्व दोष व अहं निर्मूलन गम्भीरतापूर्वक करें; क्योंकि अहं और दोष, दोनों एक-दूसरेके पूरक होते हैं और जिनका अहं अधिक होता है उनकी प्रार्थना ईश्वरतक नहीं पहुंचती है । इस बारका आपातकाल तीनसे चार वर्षका होगा और अनेक बार हमें अपने और अपने कुटुम्ब, परिजन व आत्मीयजनकी रक्षा हेतु ईश्वरकी कृपाकी आवश्यकता होगी । इसलिए आध्यात्मिक पूर्वसिद्धता अभीसे आरम्भ करे !

****

गुरु शिष्य परम्परा भारतीय संस्कृतिकी रही है अविभाज्य अंग हमारी भारतीय संस्कृतिमें गुरु-शिष्य परम्परा हमारे सांसारिक जीवनमें अन्तर्भूत थी। प्रथम पुत्रके लिए पिता, अनुजके लिए अग्रज बन्धु, पत्नीके लिए पति, ये सभी गुरु समान होते थे

और कर्मनिष्ठ, त्याग परायण ब्राह्मण सम्पूर्ण समाजका गुरु होता था। कालान्तरमें धर्मका ह्रास हुआ और सम्बन्धोंसे इस आध्यात्मिक आधारका ह्रास होने लगा और अब वह लगभग समाप्तसा हो गया है। जबतक गुरुमें तप, त्याग, प्रेम और धर्मका प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं देता है, तबतक शिष्य उनके प्रति शरणागत नहीं हो पाता है।

****

हिन्दू राष्ट्र आवश्यक क्यों ? (भाग-१)

आजका हिन्दू योग्य प्रकारसे साधना एवं धर्माचरण नहीं करता है; परिणामस्वरूप उसके जीवनमें कष्ट आनेपर वह सर्वप्रथम बुद्धिसे स्वयं उसके उपाय ढूंढता है, उसके पश्चात वह आधुनिक विज्ञानकी शरणमें जाता है और जब वह निराश हो जाता है तो धर्मकी शरणमें आता है। यदि वह पहले ही ऐसा करे तो उसे इतनी ठोकरें न खानी पडे ! ऐसा हो, इस हेतु बाल्यकालसे ही धर्मका महत्त्व उसके जीवनमें अंकित करना अति आवश्यक है और यह निधर्मी लोकतन्त्रमें कदापि सम्भव नहीं ! इस हेतु हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना करना अति आवश्यक है।

– (पू.) तनुजा ठाकुर, सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

दो राजा थे और दोनों ही भाई थे। दोनों पृथक-पृथक राज्यमें अपना शासन सम्भालते थे।

बडे राजाके राज्यमें प्रजा बहुत ही सुखी और सन्तुष्ट थी। उस राज्यमें सभी ओर शान्ति थी, प्रजा राजाके गुण गाती थी; परन्तु छोटे भाई अर्थात छोटे राजाके राज्यमें आए दिवस झगडे होते थे और वहां प्रजा बहुत ही अधिक दुःखी थी। जब छोटे राजाको पता चला कि उसके बडे भैयाके राज्यमें सब कुशल मंगल है, तब वह अपने बडे भाईके पास गया और उनके राज्यकी प्रसन्नताका रहस्य उनसे पूछा। बडे भाईने उसे अपने राज्यकी प्रसन्नताका रहस्य बताते हुए कहा, "भाई ! मेरे राज्यमें शान्तिका कारण मेरे चार मित्रोंके कारण है।

इस बातको सुनते ही छोटे राजाकी उत्सुकता और भी बढ गई। उसने पूछा, "कौन हैं आपके वे मित्र ?

क्या वे मेरी सहायता करेंगे ?"

राजाने कहा, "अवश्य कर सकते हैं।"

मैं आपको मेरे पहले मित्रके बारेमें बता दूं :

मेरा पहला मित्र है : 'सत्य', वह मुझे कभी असत्य बोलने नहीं देता है।

दूसरा मित्र है : 'प्रेम', ये मुझे कभी घृणा करनेका अवसर ही नहीं देता।

तीसरा मित्र है : 'निष्कपटता' जो मुझे सदैव प्रलोभनसे बचाता है और अधर्मको मुझतक आने नहीं देता।

और मेरा चौथा मित्र है : 'त्याग', त्यागकी भावना मेरे भीतर कभी ईर्ष्या उत्पन्न होने नहीं देती और सदैव मुझे ईर्ष्यासे बचाती है।

ये चारों मित्र सदैव मेरा साथ देते हैं और हमारे राज्यकी रक्षा भी करते हैं।"

छोटे राजाको सफलताका रहस्य समझमें आ गया।

व्यक्तिको अपने भीतर सदाचारकी बातोंको सुनकर जीवनमें उतारना चाहिए और सद्गुणोंको जीवनमें उतारते ही व्यक्ति समझ जाएगा कि यही सच्ची सफलता है।

घरका वैद्य

मूंगफली (भाग-६)

१५. 'अल्जाइमर'के लिए : किसी भी प्रकारसे मूंगफलीका सेवन करना 'अल्जाइमर' जैसे भयानक रोगोंसे मुक्ति पानेमें सहायता कर सकता है। इनमें 'रेसवेरट्रोल' (resveratrol) नामक एक यौगिक तत्त्व होता है जो मृत कोशिकाओंको कम करने, 'डीएनए'की रक्षा करने और 'अल्जाइमर'के रोगियोंमें तन्त्रिका सम्बन्धित क्षतिको रोकनेके लिए अति लाभदायक सिद्ध हुआ है। उबली हुई या भुनी हुई मूंगफली अधिक लाभदायक होती है; क्योंकि ये 'रेसवेरट्रोल'के स्तरको बढा देती है। वैज्ञानिक अध्ययनोंसे पता चला है कि 'नियासिन'में समृद्ध मूंगफलीसे, 'अल्जाइमर' रोगके कष्टको ७५% तक कम कर सकते हैं।

१६. मूंगफलीका तेल व लाभ : 'जैतून'के तेलमें भी ये तत्त्व अधिक होते हैं; किन्तु मूंगफलीका तेल, 'जैतून'के तेलसे अधिक गुणकारी होता है। तरकारी (सब्जी) बनाने, पराठा पकाने या पूरी तलने आदिके लिए भी मूंगफलीका तेल श्रेष्ठतम होता है; क्योकि इसका ज्वलनशील स्तर अधिक (२२५°C) होता है।

१७. हृदयके लिए लाभकारी : मूंगफलीमें पाए जानेवाले 'मोनो अनसैचुरेटेड फैट' (MUFA) तथा 'पोली अनसैचुरेटेड फैट' (PUFA) हृदयके लिए बहुत हितकारी होते हैं। ये रक्तमें

लाभदायक 'कोलेस्ट्रॉल'को बढाते हैं तथा हानिकारक 'कोलेस्ट्रॉल'को कम करते हैं । इनके अतिरिक्त भी इसमें बहुतसे ऐसे पोषक तत्त्व होते हैं, जो हृदयके लिए बहुत लाभदायक होते हैं, जैसे 'मैग्नेशियम' , 'विटामिन बी-३' 'B-3' , 'कॉपर', 'ओलेइक एसिड' तथा कई 'एंटीऑक्सीडेंट' इत्यादि । इसमें मिलनेवाले 'अर्जीनाइन' तथा 'एमिनो एसिड' रक्त-वाहिकाओंको 'लचीला' बनाए रखनेमें सहायक होते हैं । इससे रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) बढनेकी आशंकाकम हो जाती है। इसलिए मूंगफलीका तेल हृदयके लिए भी लाभदायक है।

उत्तिष्ठ कौन्तेय

पाकिस्तानमें हिन्दू लडकियोंके अपहरण, बलात्कार व धर्मान्तरणकी सूचना देनेवाले मानवाधिकार कार्यकर्ताको मारा चाकू

पाकिस्तानी मानवाधिकार कार्यकर्ता राहत ऑस्टिनने मंगलवार, ५ जनवरीको 'वीडियो' प्रसारित करते हुए लिखा, “मुझपर एक जिहादीने चाकूसे 'अल्लाह-हू-अकबर' बोलते हुए आक्रमण किया । मुझे नहीं पता कि वह कौन था ? वह सम्भवतः मध्य-पूर्व या कहीं औरसे था।” वे चोटिल हो गए हैं और उन्हें चिकित्सालयमें प्रविष्ट कराया गया है।

उन्होंने आगे कहा, “मैं केवल शासन और मुसलमान बहुल देशोंमें धार्मिक उत्पीडन, रंगभेद, नरसंहार और जातीय हिंसाके विषयोंकी सूचना दे रहा हूं। पूरे विश्वमें ये जिहादी इसे ‘जिहाद’के रूपमें करते हैं । जब ७० वर्ष पूर्व १९४७ में पाकिस्तान बना था, तब हम २३% थे और अब हम केवल

३% शेष हैं। यह एक व्यवस्थित नरसंहार है, जिसमें नियन्त्रित 'मीडिया' और शासनकी नीतियां यह सुनिश्चित करती हैं कि ऐसी घटनाएं कभी किसीकी दृष्टिमें न आए और अब ऐसे अपराधोंकी सूचना करनेके लिए मेरे प्रयासोंको भी रोकनेका प्रयास किया जा रही है । मुझपर आक्रमणके समय, मैंने स्वयंको बचाया नहीं होता, तो वो मेरा भी सिर काट देते, जैसा कि दूसरोंके साथ करते हैं।"

आतङ्की देशसे इसके अतिरिक्त अपेक्षा भी नहीं की जा सकती है; परन्तु ऑस्टिन जैसे लोग वास्तवमें महान ही हैं, जो अपने प्राणोंकी चिन्ता न करते हुए विश्वके समक्ष आतङ्कियोंके कुकृत्योंको लाते हैं।

****

उत्तर प्रदेशमें म्यांमार रोहिंग्याको बनाया गया बन्दी, प्राप्त हुए छद्म आधार 'कार्ड' और पारपत्र

उत्तर प्रदेशके आतङ्क विरोधी सङ्गठनने ('एटीएसने) एक रोहिंग्याको ढूंढकर बन्दी बनाया है । सन्त कबीर नगरमें यह रोहिंग्या अजीजुल्ल्लाह नामसे रह रहा था। उसके पास २ भारतीय पारपत्र (पासपोर्ट), ३ 'आधारकार्ड', १ 'पैनकार्ड', राशनकार्ड, ३ 'डेबिटकार्ड' और पांच बैंकोंके विभिन्न खातों सहित कई अन्य प्रमाण प्रात किए गए । मूलरूपसे वह म्यांमारका नागरिक है; किन्तु पिछले बीस वर्षोंसे वह भारतमें रह रहा है !

मिथ्या पारपत्रद्वारा वह बांग्लादेश और सऊदी अरब भी जा चुका है। उसके खातोंमें अबतक बहुत विदेशी धन आ चुका है, जिसकी जांच की जा रही है।

२०१७ में उसने अपनी मां, बहन, और दो भाइयोंको भी भारतमें बसनेके लिए, अवैध रूपसे प्रवेश कराया और उनके लिए भी छद्म प्रमाणपत्र बनवाए ! इस सबके लिए उसे देश विदेशसे कई व्यक्तियों, संस्थाओं और विदेशियोंसे, भी खातेमें धन प्राप्त हुआ । इसके बारेमें कई अन्य सन्दिग्ध लोगोंसे पूछताछ की जा रही है।

अजीजुल्ल्लाह २००१ में भारत आया था । मुम्बईमें इनायतुल्लाहसे उसकी भेंट हुई, जिसे उसने अपने-आपको अनाथ बताया, तो इनायतुल्लाह उसे अपने साथ ले आया । 'बदरे-आलम'ने दया करके उसका नाम भी अपने 'राशनकार्ड'में सम्मिलित करा लिया था, जबकि अजीजुल्ल्लाह न ही उनका कोई सम्बन्धी था और न ही कोई परिचित था । इसी 'राशनकार्ड'के आधारपर उसने पारपत्र तथा अन्य और भी छद्म पत्रक बनवा लिए !

उसका भाई भी नासिकमें रहता है और उसका बहनोई व एक अन्य भाई, अवैध रूपसे भारतमें प्रवेश करनेके पश्चात कहीं और चले गए हैं । इसी प्रकार 'एटीएस'ने कुछ अन्य सन्दिग्ध स्थलोंपर भी छापेमारी की है, जिससे लगभग आधा 'दर्जन' रोहिंग्योंको अपनी अभिरक्षामें लिया गया है।

पिछले सात दशकोंमें, देशद्रोही कांग्रेसके शासनकालमें ऐसे लाखों घुसपैठियोंको लाकर भारतमें बसा दिया गया है। उन्हें पक्के प्रमाणपत्र और मतपत्र दिए जा चुके हैं, जिन्हें ढूंढ पाना कठिन है; परन्तु यदि शासन वास्तवमें ऐसे लोगोंको बाहर निकालना चाहता है, तो एकनिष्ठ और बिना 'कुर्सी'की चिन्ता किए यह कार्य करें, तो ही यह देश बच पाएगा ! (०७.०१.२०२१)

उत्तर प्रदेशमें 'टेरर फंडिंग' और रोहिंग्याओंके शोधमें 'एटीएस'की 'छापेमारी', अब्दुल मन्नान सहित आधा 'दर्जन'से अधिक सन्दिग्ध बनाए बन्दी

उत्तर प्रदेशमें 'यूपी एटीएस'ने 'टेरर फंडिंग' और रोहिंग्या निवासियोंके शोधमें एक बडी कार्यवाही करते हुए सन्त कबीर नगर स्थित खलीलाबाद, बस्ती और अलीगढके अनेक जनपदोंमें छापेमारीकर अब्दुल मन्नान व लगभग आधा दर्जनसे अधिक सन्दिग्ध बन्दी बनाए हैं।

उन्होंने इस छापेमारीको स्थानीय पुलिससे भी गुप्त रखा था। 'एनबीटी'के अनुसार, यह छापेमारी अवैध रूपसे भारतमें निवास कर रहे रोहिंग्याओं तथा आतङ्कियोंको प्राप्त वित्तीय सहायताके सम्बन्धमें की गई है। 'यूपी एटीएस'का एक गुट महाराष्ट्र तथा तेलंगानाके भाग्यनगरमें (हैदराबादमें) भी ऐसी कार्यवाही कर रहा है।

२९ दिसम्बरको 'एटीएस'ने गोरखपुरके बलदेव प्लाजा स्थित नईम एण्ड संसकी भ्रमणभाष आपणि (दुकान) सहित इसी 'फर्म'की अन्य दो आपणिपर भी छापा मारा था। यहां लगे सङ्गणककी 'हार्ड डिस्क' तथा अन्य सम्बन्धित उपकरण हस्तगत किए थे।

उल्लेखनीय है कि इन्होंने दो सन्दिग्ध बांग्लादेशी आतङ्कवादियों, इकबाल और फारुखको सहारनपुरसे बन्दी बनाया था। इनके पाससे छद्म आधार 'कार्ड' तथा 'वोटर आईडी' प्राप्त हुए थे।

उत्तर प्रदेश 'एटीएस'की यह कार्यवाही प्रशंसनीय है। इससे अवैध विदेशी निवासी तथा उनकी आतङ्कवादी गतिविधियोंको थामना सम्भव होगा; परन्तु

आतङ्कनिरोधी दलकी शासकगण सुनेंगे क्या ?; क्योंकि जबतक शासकगण वास्तवमें गम्भीर नहीं होंगे, तबतक यह होना असम्भव ही प्रतीत होता है। (०७.०१.२०२१)

****

देहलीमें निर्जन मार्गपर खडी गायको वाहनमें भर कर ले गए ३ युवक

देहलीके शास्त्री नगर क्षेत्रका सामाजिक जालस्थलपर एक चित्रपट साझा हो रहा है, जिसमें देखा जा सकता है कि मार्गपर शान्तिपूर्वक खडी एक गायको बलपूर्वक तीन युवक अपने साथ वाहनमें भरकर ले जा रहे हैं। 'सुदर्शन न्यूज'नें इस चित्रपटको अपने 'ट्विटर' खातेपर साझा करते हुए लिखा है कि देहली अब मेवातके 'रिकॉर्ड' तोड रही है। शास्त्री पार्क क्षेत्रमें गायको भी सडकसे उठाकर 'कार'में डाला जा रहा है। वहीं अन्तमें यह प्रश्न भी पूछा गया है कि जब विशाल शरीरवाले गोवंश ऐसे लुप्त हो रहे हैं, तो बहन-बेटियां व बच्चे यहां कितने सुरक्षित हैं ? समाचार वाहिनीद्वारा 'वीडियो' किस समयका है, इसकी पुष्टि नहीं की गई है। शास्त्री पार्क उत्तर पूर्वी देहलीका एक क्षेत्र है, जिसके निकट मुसलमान बहुल जनसङ्ख्या है। उल्लेखनीय है कि अब देहलीमें गोवंशोंके साथ क्रूरताके अनेक प्रकरण संज्ञानमें आ रहें हैं। कुछ समय पूर्व ही द्वारका सेक्टर २३ के पोचनपुर गांवके एक नालेसे गायोंके शव व उनके अवशेष मिले थे। पशु चिकित्सक 'फॉरेंसिक' व अपराध विभागने वहां पहुंचकर जांच भी की थी तथा अज्ञात लोगोंके विरुद्ध प्रकरण प्रविष्ट किया था।

हिन्दुओंके देशमें उनकेद्वारा पूजनीय मानी जानेवाली गायोंको ही उठाकर काट दिया जाता है, तो हिन्दू स्वयंको

कितना सुरक्षित मानते हैं ? आतङ्की मानसिकताके लोग जिह्वातृप्तिके आज गोमाताको मारकर खा रहे हैं, तो कल हिन्दू सुरक्षित होंगे क्या ? भविष्यकी चिन्ता नहीं कर रहे, गहन निद्रामें सोए हिन्दू किञ्चित विचार करें !

****

आहारमें 'आर्सेनिक ट्राइऑक्साइड' विष देकर हुआ था मारनेका प्रयास, 'इसरो'के शीर्ष वैज्ञानिक तपन मिश्रने किया उजागर

भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान सङ्गठनके शीर्ष वैज्ञानिक तपन मिश्रने मङ्गलवार, ५ जनवरीको उजागर किया कि उन्हें तीन वर्षसे अधिक समय पूर्व विष देकर मारनेका प्रयास हुआ था। अपने 'फेसबुक पोस्ट' 'लॉन्ग केप्ट सीक्रेट'में उन्होंने इस बातका रहस्योद्घाटन किया कि मई २३, २०१७ को बेंगलुरुमें 'इसरो' मुख्यालयमें पदोन्नति साक्षात्कारके अन्तराल उन्हें घातक 'आर्सेनिक ट्राइऑक्साइड 'विष देकर मारनेका प्रयास किया गया था।

मिश्रने कहा कि उन्हें डोसेकी चटनीमें विष देकर मारनेका प्रयास हुआ था, जिसके पश्चात उन्हें तनाव और वेदनासे (दर्दसे) उभरनेमें २ वर्ष लग गए । अपने 'पोस्ट'में उन्होंने अपनी हत्याके प्रयासोंमें अमेरिकाकी संलिप्तता भी बताई । तपनने लिखा कि वर्ष २०१९ में अकस्मात एक भारतीय अमेरिकी प्राध्यापक उनके कार्यालयमें दिखाई दिया और उन्हें विष देनेकी इस प्रकरणपर शान्त रहनेको भी कहा गया। इससे पूर्व उन्हें 'ईमेल'केद्वारा भी सैंकडों धमकियां मिलती रहती थीं। वह बताते हैं कि कई बार सुरक्षा विभागोंने उन्हें चेतावनी देकर बचाया था।

बता दें कि तपन मिश्र भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान सङ्गठनके अहमदाबाद स्थित अन्तरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्रके निदेशकके रूपमें सेवा दे चुके हैं। 'ऑपइंडिया' नामक एक समाचार संस्थाने इस 'पोस्ट'को देखनेके पश्चात तपन मिश्रसे वार्तालाप करनेका प्रयास किया, तो उन्होंने चर्चामें कहा, "शासन और राजनीतिक तन्त्रसे मेरा निवेदन है कि जो लोग देशका निर्माण करते हैं, यदि हम उनकी रक्षा नहीं करते हैं; तो कल हमारा देश नष्ट हो जाएगा।"

मिश्रजीने तो उजागर किया तो यह कुछ एक प्रसार वाहिनीयोंने दिखाया होगा; पहले कितनी ही भारत शासनको इस विषयमें चेताया जा चुका है; परन्तु शासनके कानोंपर जूं नहीं रेंगती है, जो लज्जाजनक है। इससे पूर्व भारतकी समस्त प्रतिभा षड्यन्त्रकी बलि चढे, शासन जागे!

****

'टीवी चैनल्स'पर हनुमान चालीसा यन्त्र जैसे 'अन्धविश्वाससे जुडे विज्ञापन' अवैध, औरंगाबाद न्यायालयने कहा वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनानेको

यह याचिका औरंगाबाद निवासी राजेन्द्र अंबोरेने २०१५ में प्रविष्ट की थी। अंबोरेने मार्च, २०१५ में चार 'चैनलों'के विरुद्ध हनुमान चालीसा यन्त्रको बढावा देनेके कारण कार्यवाही करनेकी मांग की थी।

मंगलवार, ५ जनवरीको एक सुनवाईमें औरंगाबाद न्यायालयने कहा कि यदि भगवान हनुमान, किसी भी बाबा सहित किसी भी भगवानके नामको जोडकर यह प्रचार किया जाता है कि लोगोंके जीवनमें प्रसन्नता आ जाएंगी, और इन यन्त्रोंमें विशेष,

चमत्कारी और अलौकिक शक्तियां हैं, जिनसे उनके व्यवसायों, स्वास्थ्य और शिक्षामें प्रगति होगी, तो यह अवैध होगा। न्यायालयने ऐसा करनेवाले 'टीवी चैनलों'के विरुद्ध आपराधिक अभियोग प्रविष्ट करनेका भी आदेश दिया है। यह याचिका औरंगाबाद निवासी राजेन्द्र अंबोरेने २९१५ में प्रविष्ट की थी। अंबोरेने मार्च, २०१५ में चार 'चैनलों'के विरुद्ध हनुमान चालीसा यन्त्रको बढावा देनेके कारण कार्यवही करनेकी मांग की थी।

यह बडे आश्चर्यकी बात है कि भारतके न्यायालय हिन्दू धर्मपर निर्णय देनेमें या तथाकथित समाज सुधारकोंद्वारा निर्धारित अन्धविश्वास हो या इनसे सम्बन्धित याचिकाएं हों, इन सभीपर न्यायालयद्वारा लिया गया स्वत संज्ञान, इन सभी प्रकरणोंमें न्यायालयको निर्णय देनेकी बहुत तत्परता रहती है और साथमें ज्ञान भी देते हैं; परन्तु जैसे ही किसी और धर्मका प्रकरण आता है, जैसे 'पानी पढना' हो या 'ताबीज' देना हो या किसी इस्लामिक धार्मिक स्थलमें महिलाओंके प्रवेशकी बात हो, तब न्यायालय धर्मका प्रकरण कहकर हस्तपेक्ष करनेसे मना कर देते हैं, तो क्या यह संयोग है या षड्यन्त्र ? ध्यान देनेवाली बात यह है कि विज्ञान समय-समयपर अपनी मान्यताएं परिवर्तित करता रहा है; परन्तु भारतीय संस्कृतिकी आत्मा सत्य सनातन धर्मकी मान्यताएं एवं उसमें आस्था शताब्दियोंसे एक जैसी हैं और सबसे प्रमुख बात यह है कि जहां विज्ञानको समाधान नहीं सूझता है, वहीं धर्ममें सभीका समाधान विद्यमान है। (०७.०१.२०२१)

वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

१. वैदिक उपासना पीठद्वारा विजयादशमीसे अर्थात दि. २५/१०/२०२० से ऑनलाइन बालसंस्कारवर्गका शुभारंभ हो चुका है। यह वर्ग प्रत्येक रविवार, त्योहारोंको एवं पाठशालाके अवकाशके दिन प्रातः १० से १०:४५ तक होगा। इस वर्गमें ७ वर्षसे १५ वर्षकी आयुतकके बच्चे सहभागी हो सकते हैं। यदि आप अपने बच्चोंको इसमें सम्मिलित करने हेतु इच्छुक हैं तो पञ्जीकरण हेतु कृपया 9717492523, 9999670915 के व्हाट्सऐप्पपर सन्देशद्वारा सम्पर्क करें।

२. वैदिक उपासना पीठके लेखनको नियमित पढनेवाले पाठकोंके लिए निःशुल्क ऑनलाइन सत्सङ्ग आरम्भ किया जा चुका है।

आनेवाले सत्संगका विषय व समय निम्नलिखित है :

सङ्ख्या सीमित होनेके कारणकृपया अपना पञ्जीकरण यथाशीघ्र कराएं । इस हेतु ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) के व्हाट्सएप्पपर अपना सन्देश भेजें। कृपया पञ्जीकरण हेतु फोन न करें।

अगले कुछ सत्सङ्गोंकी पूर्व सूचना :

अ. जपमालासे सम्बन्धित तथ्य १ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

आ. शिष्यके गुण, ४ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

इ. नमस्कारसे सम्बन्धित शास्त्र, ६ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

ई. नामजप कब, कहां और कितना करें ? ८ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

३. वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रत्येक दिवस भारतीय समय अनुसार रात्रि नौसे साढे नौ बजे 'ऑनलाइन सामूहिक नामजप'का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें साधना हेतु मार्गदर्शन भी दिया जाएगा, साथ ही आपको प्रत्येक सप्ताह 'ऑनलाइन सत्सङ्ग'के माध्यमसे वैयक्तिक स्तरपर भी साधनाके उत्तरोतर चरणमें जाने हेतु मार्गदर्शन दिया जाएगा, यदि आप इसका लाभ उठाना चाहते हैं तो आप हमें ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) पर "मुझे सामूहिक नामजप गुटमें जोडें", यह व्हाट्सऐप्प सन्देश भेजें !

४. जो भी व्यक्ति वैदिक उपासना पीठके तत्त्वावधानमें अग्निहोत्र सीखना चाहते हैं वे ९९९९६७०९१५ के व्हाट्सऐप्पपर अपना सन्देश इसप्रकार भेजें ,'हमें कृपया अग्निहोत्र गुटमें सम्मिलित करें।'

५. कोरोना जैसे संक्रामक रोग एवं भविष्यकी आपातकालकी तीव्रताको ध्यानमें रखते हुए वैदिक उपासना पीठद्वारा संक्षिप्त दैनिक हवन कैसे कर सकते हैं ?, इस विषयमें १५ अगस्तसे एक नूतन उपक्रम आरम्भ किया जा रहा है। इसमें अग्निहोत्र समान इसे सूर्योदय या सूर्यास्तके समय ही करनेकी मर्यादा नहीं होगी, इसे आप एक समय या सप्ताहमें जितनी बार चाहे, कर सकते हैं । यदि आप सीखना चाहते हैं तो ९९९९६७०९१५ पर हमें इस प्रकार सन्देश भेजें, “हम दैनिक हवनकी सरल विधि सीखना चाहते हैं, कृपया हमें यथोचित गुटमें जोडें।”

प्रकाशक : Vedic Upasana Peeth
जालस्थल : www.vedicupasanapeeth.org
ईमेल : upasanawsp@gmail.com
सम्पर्क : + 91 9717492523 / 9999670915